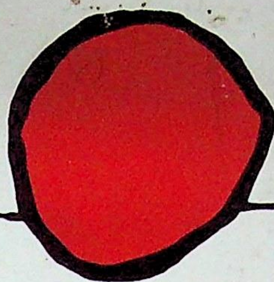


सरगम तुम्हारा है

– विजयवीर त्यागी

– भूमिका से

.......शब्दों के चितेरे विजयवीर त्यागी की वाणी से जो निकलता है वह कविता होती है और उनकी लेखनी से जो निकलता है वह भावात्मक साहित्य होता है। जब वह कविता को अपनी वाणी देते हैं तो विचारों की, भावनाओं की चादर पर झिलमिलाती ऐसी अनूठी छटा होती है कि मुंह से वाह-वाह निकल पड़ती है.

— बाबू सिंह चौहान

श्रद्धेय डॉ. राम स्वरूप जी
आर्य को सादर

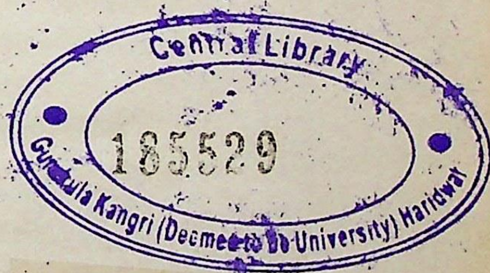
- विजयवीर त्यागी



सरगम तुम्हारा है

(गीत संकलन)

विजयवीर त्यागी





स्वर्णाक्षरी प्रकाशन
बम्बई_४०० १०२.

सरगम तुम्हारा है

(विजयवीर त्यागी के गीतों का संकलन)

मूल्य पन्द्रह रूपये मात्र

प्रथम संस्करण : १९८६

प्रकाशक : स्वर्णाक्षरी प्रकाशन बम्बई-१०२.

मुद्रक : स्वर्णाक्षरी प्रिन्टर्स, जोगेश्वरी (प.), बम्बई-१०२.

आवरण : शंकर म्हात्रे

भूमिका

शब्दों के चितेरे विजयवीर त्यागी की वाणी से जो निकलता है वह कविता होती है और उनकी लेखनी से जो निकलता है वह भावात्मक साहित्य होता है. जब वह कविता को अपनी वाणी देते हैं तो विचारों की, भावनाओं की चादर पर झिलमिलाती ऐसी अनूठी छटा होती है कि मुँह से वाह-वाह निकल पड़ती है. विजयवीर त्यागी के कविता-संग्रह को देखकर मुझे लगता है कि उन्होने पाठकों को तृषित रखने के लिए अपनी सारी रचनाएँ संकलित नहीं की हैं क्योंकि मैं व्यक्तिगत रूप से जानता हूँ कि उन्होंने बहुत कहा है, बहुत लिखा है. कभी वे दिन भी बीते हैं कि जब उन्होंने अपनी भावनाओं के दीप कल्पनाओं के नेह से जलाये तो साँझ ऊषा के द्वार तक जागते रहने पर बाध्य होती रही है.

भाई विजयवीर त्यागी ने अपनी काव्य-यात्रा एक बाल कवि के रूप में प्रारंभ की थी, जब वे जवानी की ड्योढी पर पहुँचे तो उन्होंने अपने हाथों में हास्य-कलश संभाल लिया और वे अपनी जन्मभूमि बिजनौर (उ. प्र.) के कवि सम्मेलनों के मचों पर श्रोताओं को गुदगुदाने और मुक्त अट्टहास बिखेरने को प्रेरित करने के लिए पहुँचने लगे. उन्होंने अपनी हास्य रस की रचनाओं में भी किसी पीड़ा को ही मुस्कान की घायल शहनाई. यह उनके अन्तर मन में बैठे पीड़ा के गायक की उपस्थिति का ही परिचय देता था. वे कब एकदम छलांग लगाकर पीड़ा के प्रांगण में अपने मन के 'एकतारा' को लेकर पहुँच गए किसी को पता ही न चला वही विजयवीर त्यागी जो कभी कवि 'मुन्नू' थे अचानक बोल पड़े —

जितना दर्द दिया है तुमने
मुझको वह सौगात बहुत है
मेरे सपनों के उपवन को
पतझर दो मधुमास न दो तुम

उन्होंने जो कहा है वह कोई दर्द की रामायण से कम नहीं जिसका राम अपने पथ पर बिखरे काँटो को अपने लिए वरदान मानता है. वे कहते हैं :–

अपने प्यासे अधर दिखाकर
मैंने जल का दान न माँगा
इसीलिए लगता है मुझसे
हर पनघट नाराज रहा है

इस काव्य–संग्रह में ऐसी कितनी ही रचनाएं हैं जो 'पीर' में नहाई हुई हैं और यह कवि की अपनी पीर नहीं वरन उस काल की पीर है जिसमे कवि ने विचारों को शब्दों का वासंती या कभी–कभी काजली वसन पहनाया है. इस काल में धरती प्यासी रही है, आकाश से आग बरसी है और आदमी को कदम–कदम पर बाधाओं और विभाजन की दीवारें झेलनी पड़ी हैं. इस दौर में आदमी ने अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जबरदस्त संघर्ष किया है यही नहीं अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए भी लड़ाई लड़ी है. इसलिए इस दौर के कवि को माटी की गध दर्द और आंसुओं से रची हुई महसूस हुई है, अतएव अगर कवि को अपनी प्रयसी तक पहुचने में पूरा सागर लाँघने की लाचारी दिखी तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है. जहाँ विजयवीर त्यागी का कवि मन लहरों को तट पर सर पटकते रहने की बाध्यता पर द्रवित हुआ है वहीं उन्होंने आशा और संभावनाओं को अपने काव्य की वेदी बैठाकर उनकी आरती भी उतारी है, वे कहते हैं :–

आज तुमको देखकर जी चाहता है
चाँद से कह दूं जरा दरपन निहारे

अपने लक्ष्य के प्रति इतना श्रद्धाभाव उनमें है वहीं विजय का इतना जबरदस्त विश्वास भी कि वे कह उठते हैं :–

तुम चलो पथ में बिछे आकाश गंगा
आरती करते चलें नभ के सितारे

उनमें विश्वास की सुदृढ़ता का रंग उनके सारे काव्य में छाया हुआ है. वे चाहे 'मंझधार किनारा बन जाए' शीर्षक कविता में इसे प्रगट करें या कहीं और–

मैं चलूँ सिमट आये मंजिल खुद पाँवों में
मैं बढ़ूं तो हर मझधार किनारा बन जाए

'सावन को ला बसा दूं' शीर्षक रचना में उनका विश्वास अंगड़ाई ले रहा है-

यह कामना है मेरी, निर्माण बन के जागूं
झुलसी हुई धरा पर सावन को ला बसा दूं

इस काव्य-संग्रह में अनेक ऐसे गीत हैं जिनमें निराशा झांक रही है, यह इस दौर की मनःस्थिति की अभिव्यक्ति है, लेकिन संपूर्ण काव्य में भविष्य के प्रति आशा का स्त्रोत प्रवाहित प्रतीत होता है.

भाई विजयवीर त्यागी ने अपने कथ्य के लिए नए प्रतीकों का प्रयोग किया है. उनके लिए काजल, पनघट, साहिल, लहर, पथ, चाँद और दीप ऐसे प्रतीक हैं जिनसे कवि की व्यथा कथा कही जा सकती है इसलिए उन्होंने इन प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया है लेकिन उनके काव्य में सुबह की ताजगी और शबनम से नहाए पुष्प-पल्लवों की मुस्कान अनूठे रंग में मौजूद है और उनकी रचनाओ से लगता है कि आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्त करने की उनमें गजब की क्षमता है. वे पेशेवर कवि नहीं है, ऐसे कवि नहीं जो शब्दों की नुमायश में जीते हैं और मधुर कंठ का कवि-सम्मेलनों में प्रदर्शन करके जीवन-यापन करते हों, वे शिक्षक के अलावा सांस्कृतिक, साहित्यिक कार्यक्रमों के संयोजन, संचालन और पत्रकार के रूप में अपनी प्रतिभा का दिग्दर्शन कराने के बाद आज भी जो कुछ क्षण बचा पाते हैं उनमें एक कवि के रूप में जीते हैं और उससे जो सृजन होता है उसका कुछ अंश इस काव्य संग्रह में पढ़ने-को मिलेगा.

इससे सुधी पाठक यह भी अनुभव करेंगे कि जैसे 'कहते हैं कि गालिब का है अन्दाजे बयां और' इसी प्रकार विजयवीर त्यागी का भी अन्दाजे बयाँ उसका स्वर भीड़ से कहीं अलग दिखाई देता है, इस कारण उन्होंने अपनी पहचान अलग से बनाई है. उनकी रचनाओं का सस्वर पाठ हो अथवा कोई संगीतकार उन्हें स्वर-बद्ध करे तो श्रोता उनकी रचनाओं को अपनी स्मृतियों में सहेज कर रखेंगे, विजयवीर त्यागी की ये रचनाएँ किसी भी गायक के कंठ को धन्य करने की क्षमता रखती हैं.

मुझे आशा है कि यह काव्य-संग्रह हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि सिद्ध होगा.

- बाबू सिंह चौहान

दैनिक बिजनौर टाइम्स
बिजनौर (उ. प्र.)

मुझे यह कहना है कि

अपने स्वप्न, अपनी कल्पना की व्याख्या कवि स्वयं नहीं कर सकता, न यह काम करने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि 'कविः करोति काव्यानि रसं जानति पण्डिता' फिर भी यह वर्जित काम मैं कर रहा हूँ किन्तु अपनी कविताओं के बारे में बात न करके मैं गीत विधा के सम्बन्ध में ही कुछ कहना चाहूँगा क्योंकि कविता कवि से बड़ी होती है.

इसमें दो राय नहीं हो सकती कि हिन्दी-साहित्य की धरती को बंजर होने से बचाने में सौंदर्य और सरसता के प्रतीक गीतों का महत्वपूर्ण योगदान है. गीत हमेशा मन की धड़कन को शब्द और स्वर देता रहा है और परम्परा से जुड़े होने के बावजूद उसने भावबोध को समकालीन आधुनिकता से जोड़ने का प्रयास किया है. माटी की सोंधी गंध के साथ उसमें यथार्थ का सजीव अंकन भी रहा है तथा उसने सदा विविध और विस्तृत आयामों से गुजरती युग चेतना को रूपायित किया है. रस और कविता में कभी विरोध नहीं हो सकता, यही वजह है कि जबतक काव्य में लयात्मकता सुरक्षित है वह सहज संप्रेषणीय और चिर स्मरणीय रहेगा.

गीतों की प्रामाणिकता पर संदेह करने वाले और गीत विधा को आधुनिक युग बोध को सिमेटने में एकदम असफल करार देनेवाले, उसे सीमित संवेदनाओं का माध्यम घोषित करने वाले आलोचक तथा छन्द विरोधी भी अब गीतों की वापसी की बात करने लगे हैं, सच तो ये है कि गीत कहीं दूर गया ही नहीं था, वह सारे आरोपों और विरोधों की व्यूह बंदी के बावजूद हमारे बीच ही रहा, वादों और विवादों के चश्में से उसे देखने और परखने वाली निगाहें अब यह जानती हैं कि गीत के चेहरे पर छाया धुंध छट चुका है और आज उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का पैनापन और प्रेषणीयता नये छोरों का स्पर्श कर रही है.

आज का गीति काव्य युग सापेक्ष्य अभिव्यंजना का सशक्त माध्यम ही नहीं अपितु उसके साथ कविता में भाषा की एक नई सभ्यता का उदय भी हो रहा है.

काव्य को खेमों में बाँटने, गीत और कविता के बीच विभाजक रेखाएँ खींचने, 'कंटेन्ट' और 'फार्म' के नाम पर नारे उछालने, 'नये पुराने' लेबिलों की बैसाखी के सहारे आत्म प्रतिष्ठा की होड़ से काव्य की अस्मिता के बिखरने और रचना धर्मिता के स्त्रोत सूखने की ही संभावनाएँ बढ़ती हैं, बेहतर यही होगा कि हम वादों और विवादों से परे काव्य की संलयात्मक आंतरिकता और उसके अन्तः संगीत के विकीरण में सहायक बनें, गीतों को सामयिक चेतना का सुदृढ़ आधार दें.

जहाँ तक इस काव्य संकलन की रचनाओं का संबंध है वे पारंपरिक गीतों की विकास यात्रा की ही एक कड़ी हैं. मैं जानता हूँ कि उम्र के एक रेशमी दौर में लिखे गए इस काव्य संग्रह के अधिकांश गीत आधुनिक गीत विधा के कथ्य और शिल्प के सम्मुख, उसकी गरिमामय ऊँचाइयों के सामने बहुत बौने से दिखाई देंगे. प्रारंभिक काल की ये रचनाएं एक सतहीपन का अहसास करा सकती हैं क्योंकि ये सभी ज्ञान और अज्ञान के संधि स्थल का सृजन हैं. वक्त गुजरने के साथ जिन्दगी और अनुभव आदमी को तराशते हैं उसकी समझ और सोच को एक नई दिशा देते हैं कवि भी इसका अपवाद नहीं हैं. मेरा भी काव्य के नये तेवरों और भंगिमा से आमना-सामना हो रहा है, जिसने मुझे बड़ी तीव्रता से इस विधा की गहराइयों का अहसास कराया है, मेरे चिन्तन में इससे जो बदलाव आया है, अनुभवों को जो विस्तार मिला है उसका सबूत शायद मेरे आगामी काव्य संकलन की रचनाऐं ही होंगी.

इस काव्य संग्रह की मेरी इन प्रारंभिक रचनाओं के प्रकाशन से काव्य विधा की श्री वृद्धि की संभावना भले ही न हो लेकिन मुझे यह लाभ जरूर हुआ है कि मेरी अधिकांश रचनाओं की तरह ये खो जाने से बच गयी हैं, और उसके लिए मैं अभारी हूं अपने आत्मीय कवि-पत्रकार भाई हृदयेश 'मयंक' का जिनके स्नेहिल आग्रह और सक्रिय सहयोग से इस संग्रह का प्रकाशन संभव हो सका है.

इन रचनाओं को जुटाने के लिए धूल भरे कागजों को तलाशा तो अतीत की अनेक स्मृतियाँ साकार हो गयी जब बिजनौर की साहित्यिक गोष्ठियों में आदरणीय

नगेन्द्र कौशिक के स्नेहिल सान्निध्य में कवि निश्तर खान काही, 'हिमकर', मनोज, तर्ज लखनवी, हितेश कुमार शर्मा, शत्रुघ्न वर्मा, शौक बिजनौरी, रहबर आदि के साथ सुनने–सुनाने और लिखने की प्रेरणा मिला करती थी.

बम्बई आगमन पर उन काव्य संध्याओं की यादें मन को आहत करती रहीं लेकिन 'स्वर संगम' के माध्यम से न केवल उस कसक को एक राहत मिली बल्कि भाई हृदयेश मयंक, उत्पल, आनन्द त्रिपाठी, नामवर, समीर, आलोक भट्टाचार्य, हस्तीमल हस्ती, नीरज कुमार, तृषित, मिलिंद आदि अनेक ने अभावों की पूर्ति कर दी. मैं नामोल्लेख किए बिना अपने सभी साहित्यिक मित्रों को प्रणाम करता हूं जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन मेरी काव्य यात्रा का संबल रहा है.

इस संकलन की भूमिका लिखकर श्रद्धेय बाबू सिंह चौहान ने जिस उदार स्नेह का परिचय दिया है उसके प्रति आभार व्यक्त करके मैं उसकी महत्ता को घटाना नहीं चाहता.

मेरे आत्मीय बन्धु कवि श्री किरण वाडीवकर ने सहयोग का हाथ न बढ़ाया होता तो यह काव्य-संग्रह अमूर्त ही रह जाता. संग्रह के नयनाभिराम मुख पृष्ठ रेखांकन के लिए मैं श्री शंकर म्हात्रे का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा.

३०५, ग्रीन फील्ड्स,
कारले राचन रोड, बान्द्रा, बम्बई–५०

– विजयवीर त्यागी

अनुक्रम :

सरगम तुम्हारा है

मधुर अनुभूतियों ने शब्द के पावन धरातल पर
तुम्हारा अनछुआ सौन्दर्य गीतों में उतारा है
कवि की कल्पना के कंठ में सरगम तुम्हारा है.

मधुर मुस्कान जैसे टूटकर पायल बिखर जाये
कुंआरी लाज जैसे मेघ में बिजली सिहर जाये
अधर ऐसे अगर वे प्यार से कोई सुमन चूमें
उमर भर के लिए उस बाग में सावन ठहर जाये

नयन जैसे कमल की पांखुरी पर दीप जलते हों
सघन अलकें कि जिनको देखकर बादल मचलते हों
तुम्हारी देह के तट पर सदा पूनम नहाती है
अलस अंगड़ाई जिसके साथ ये मौसम बदलते हों

किसी मदहोश रूपाली कथा की नायिका सी तुम
अजन्में, प्राण के मादक स्वरों की गायिका सी तुम
न जाने कौन सी वंशी तुम्हें गोकुल से ले आई
किसी अनजान मोहन की गुजरिया राधिका सी तुम

घटा की इन्द्रधनुषी तूलिका तेरे करों में है
हृदय के गीत की हर भूमिका तेरे स्वरों मे है
बने तीरथ जहां तुम पुण्य से पावन चरण रख दो
तुम्हारा रूप छवि के सिन्धु का अंतिम किनारा है

कवि की कल्पना के कंठ में सरगम तुम्हारा है.

स्वप्न खंडित हो गए

भर गया विश्वास पर संभावनाएं जी रही हैं.

हास भी तो आंसुओं की भूमिका बनकर मिला
कम न हो पाया कभी भी दर्द का ये सिलसिला
धूम्र सी होकर विसर्जित रह गयी है उम्र सारी
स्वप्न खंडित हो गए, पर कल्पनाएं जी रही हैं

कंठ में अनुभूतियों के, आज वह सरगम नहीं है
भार अनजाने अभावों का, हृदय पर कम नहीं है
एक भी दूरी न सिमटी, लक्ष्य की लम्बी डगर में
थक गए संकल्प, फिर भी आस्थाएं जी रही हैं

भूमिका ही रच गयी, आलेख उपसंहार का भी
हो गया संपूर्ण जीवन से कथानक प्यार का भी
अर्घ्य के पावन-सुमन ठुकरा गयी पाषाण-प्रतिमा
बुझ गयी है आरती, आराधनाएं जी रही हैं.

किसी की प्रीत का काजल

किसी की प्रीत का काजल, रचा लो तुम नज़रिया में
तुम्हें जो रंग भाये तुम वही रंग लो चुनरिया में.

अधर आतुर, विकल बांहें, सलज, सिहरी हुई चितवन
नशीले स्वप्न पलकों में संजोये प्राण की धड़कन
नवागत कल्पना स्वकल्प मुग्धा भावनाओं के–
सभी का भार है इस पर बहुत सुकुमार है यौवन

किसी विश्वास की मजबूत बांहें थाम लो वरना–
सरल है डगमगा जाना समर्पण की डगरिया में.

ये मधुवन है यहां भंवरे मिलन के गीत गाते हैं
सुमन की पांखुरी को प्यार का तीरथ बताते हैं
सभी हैं रूप के लोभी सभी हैं प्रीत के चारण
यहां छलिया वचन विश्वास के तट पर नहाते हैं

परखकर सौंपना सौरभ किसी को प्रीत कलिका का
नहीं तो सिर्फ शूलों की चुभन होगी उमरिया में.

अपरिचित लक्ष्य से लेकिन डगर की बात करते हैं
किनारे बैठ सागर के लहर की बात करते हैं
नहीं कोई यहां जो जान पाये प्यास पनघट की–
पिपासित सब यहां अपने अधर की बात करते हैं

छलकते तृप्ति के कंचन-कलश को पूजते सब हैं–
किसे है मोह जग में रिक्त माटी की गगरिया में.

आंधी से की नहीं खुशामद

अपने प्यासे अधर दिखाकर, मैंने जल का दान न मांगा
इसीलिए लगता है मुझसे, हर पनघट नाराज रहा है.

लहरों को विश्वास सौंपकर, पतवारों को फेंक दिया था
सागर की सत्ता के सम्मुख, बस इतना अपराध किया था
आंधी से की नहीं खुशामद, तूफानों से क्षमा न मांगी
मेरे संकल्पों ने हंसकर, विपदा का हर रोष पिया था

एकाकी वह अंतिम क्षण तक, झंझाओं से रही जूझती
साहिल से दो चार कदम की, दूरी पर ही रही डूबती
इस पर भी घबराकर उसने आश्रय का अहसान न मांगा
इसीलिए मेरी तरणी से, शायद तट नाराज रहा है

परिणय के बदले में मैंने. रूपाली अभिसार न चाहा
जो केवल तन को ही घेरे. उन बांहों का हार न चाहा
मन के एक रतन की खातिर, नौलक्खे मोती ठुकराये
काजल की डोरी में बंदी रखनेवाला प्यार न चाहा

वर्तमान को बना न पाया अपनी विगत प्रीत का दर्पण
कर न सका आकुल आवेशों को अपना विश्वास समर्पण
मिले शाप मुझको कि मैंने कोई भी वरदान न मांगा
इसी अहं के कारण मुझसे, हर घूंघट नाराज रहा है.

किन राहों का सिंदूर बनें

किन राहों का सिंदूर बनें पग ज्ञात किसे
हर मंजिल को दुल्हन बतलाना मुश्किल है.

आंखें अकसर झूठा परिचय दे देती हैं
हर सौरभ मादक सावन नहीं हुआ करता
मन मीत सदा मन से पहचाना जाता है
हर रूप यहां मनभावन नहीं हुआ करता

कुछ मेघ भले प्यासे चातक को तरसायें
हर बादल को पाहन बतलाना मुश्किल है.

जो कभी न तट के चुंबन को ललचाती हों
ऐसी कितनी हैं लहर सिंधु के आंचल में
चिर मूक बनें रहना चाहें बिन झनकारे-
आखिर कितने घुंघरू हैं ऐसे पायल में

डोरी जिससे इन सांसो की बंध जाती है
उस आंचल को बंधन बतलाना मुश्किल है.

पापों के अनगिन रूप बदलते रहते हैं
पर, पुण्यों के परिधान नहीं बदला करते
बाधाएं चाहे सौ सौ बार बदलती हों
संघर्षों के अरमान नहीं बदला करते

अभिव्यक्त सान्त्वना का हर आंसू
गंगाजल सा पावन बतलाना मुश्किल है.

शब्द के परिधान क्या दूं

आज तुमको देखकर जी चाहता है
चांद से कह दूं जरा दरपन निहारे.

लाज में सिमटा हुआ यौवन तुम्हारा
मेघ से लिपटी हुई सौदामिनी सा
भर रहा है प्यार की पूनम नयन में
रूप यह मादक शरद की चांदनी सा
कल्पनाओं की नशीली घाटियों के
स्वप्न को साकार तुमने कर दिया है
लग रहा जैसे नियन्ता ने तुम्हीं में
विश्व भर का रूप लाकर भर दिया है
क्या भला तुलना तुम्हारी हो किसी से
सोचता हूं मैं तुम्हें उपमान क्या दूं
सृष्टि की सारी छवि तुममें बसी है
शब्द के अब मैं तुम्हें परिधान क्या दूं

तुम चलो पथ में बिछे आकाश गंगा
आरती करते चलें नभ के सितारे.

जिन्दगी की तुम मधुरतम कल्पना हो
तुम उमंगों की नशीली रागिनी हो
हर नियंत्रण टूट जाता है जहां पर
प्यार की उस राह की, तुम चांदनी हो
वह नशीली तान तुम जो हो मुखर तो
मरघटों में जिन्दगी के स्वर जगा दे
कर उठे संयम समर्पण देख जिसको
साधना हर पुण्य की बाजी लगा दे
सिर नवा दें युग-युगों याचनाएं
एक अनजाना स्वयं वरदान हो तुम
कुछ नहीं है शेष जिसके बाद जग में
जिन्दगी का वह सुखद अनुमान हो तुम

एक क्या सौ-सौ जनम तक वंदनाएं
अश्रु से धोती रहेंगी पग तुम्हारे.

नयन के नीर से पूछो

मिलन का, मोल क्या है, यह नयन के नीर से पूछो
किसी की कल्पना की, अधबनी तस्वीर से पूछो.

नजर में बिजलियों के, चार तिनके क्यों खटकते हैं
किसी निर्दोष दीपक पर, बवंडर क्यों झपटते हैं
सहन क्यों हो नहीं पाती खुशी कोई जमाने को
पिपासित प्राण क्यों तट पर सदा प्यासे भटकते हैं

लहर क्यों सर पटकती है, यह निष्ठुर तीर से पूछो
किसी की कल्पना की, अधबनी तस्वीर से पूछो.

समीरण पर कहीं शहनाईयां जब गीत गाती हैं
सुहागिन के लिए सखियां मिलन का पथ सजाती हैं
किसे मालूम किसकी सिसकियां एकांत कोने से
उभरती हैं, बिखरकर उन स्वरों में डूब जाती हैं

विवशता प्राण की, इक लाज की जंजीर से पूछो
किसी की कल्पना की अधबनी तस्वीर से पूछो.

टिकी हो आंख जिस पर, वह सितारा टूट जाये तो
बंधी हो सांस जिससे, वह सहारा छूट जाये तो
जिसे अपना समझ सौंपे सरल विश्वास जीवन का
वह छलिया, धरोहर आस्था की लूट जाये तो

किसी रांझे की पीडा को सिसकती 'हीर' से पूछो
किसी की कल्पना की अधबनी तस्वीर से पूछो.

गंध बसाकर चले गए

उन बड़ी-बड़ी नव कलिका जैसी आंखों से
तुम मन में मोहक गंध बसाकर चले गए.

सांसों में सहसा महक उठा सौरभ कोई
प्राणों में ज्यों सावन अनजाने तिर आया
तेरी शरमाई चितवन का काजल लेकर
बे मौसम ही गीतों का बादल घिर आया

संकोची परिचय के अधरों के खुलने तक
उस सलज मौन को खोयी वाणी मिलने तक
सौ-सौ जन्मों वाले पावन सम्बन्धों को
शंकाकुल घाटी में भटका कर चले गए.

जाने क्यों ओझल सपनों की अनुगामी बन
फिरती प्राणों की प्रीत बावरी बौराई
मालूम नहीं अब तक अपराधिन अभिलाषा
करती है क्यों सूने अंतर में पहुनाई
रूपाली छवियां यों ही लूटा करती हैं
आकृतियां बनकर ही तो टूटा करती हैं
रह गया बिंब अंकित उसके हर टुकड़े पर
जिस दर्पण से पाहन टकराकर चले गए.

मंझधार किनारा बन जाये

मैं चलूं, सिमट आयें मंजिल खुद पांवों में
मैं बढ़ू तो हर मझधार किनारा बन जाये.

मुझसे मांगी है सदा जिन्दगी गीतों ने
मैंने अकुलाते अधरों को मृदुगान दिया
मेरे द्वारे जब आई याचक अनुभूति-
मैंने उसको अभिव्यक्ति का वरदान दिया

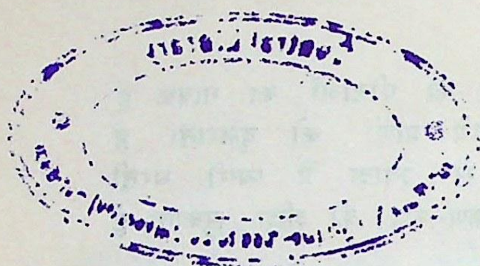
हर रश्मिपुंज मुझसे ही ज्योति लेता है
मैं छू दूं पथ का ठुकराया पाषाण अगर-
अलका से उजला अमर सितारा बन जाये.

सौदा करता हूं अक्सर गम से खुशियों का
नीलाम चढ़ाया अधरों का उल्लास कभी
मैंने महमान बनाकर रक्खा पतझर को
कर दिया विदा बिन स्वागत ही मधुमास कभी

मैं हसूं अगर मुसकानों का-
उत्तर आयें श्मशानों से
मैं विकल अगर तो अंबर के-
दृग का जल खारा बन जाये.

मैं कवि विश्व की पीडाओं का गायक हूं
मैं हर विसरायें प्राणों को दुलराता हूं
मुझको अंबर से ज्यादा है प्यारी धरती
मैं माटी के कण-कण को शीश झुकाता हूं

हर किरन मेरा ही सन्देशा
द्वारे - द्वारे दे आती है
वह स्वप्न टूट जाये जो मेरे नयनों से
उस धरती की सौगात उजारा बन जाये.



मिलन के गीत उभरेंगे

जरा दो चार आंसू के, कसैले घूंट पी लो फिर–
मिलन के गीत उभरेंगे प्रणय की मूक पायल से.

उमड़ती आंधियों को धूल का एक कण समझते हैं
कड़कती बिजलियों को राह का दर्पण समझते हैं
सिमेटे लक्ष्य पांवों में सितारे चूम आते हैं
क्षितिज के पार सपनों के नगर में घूम आते हैं

थकन पग की सदा, उनकी लगन से हार जाती है
चुभन की सेज पर, करते हैं जो अभिसार मंजिल से.

नये संकल्प अपनी आस्था में जोड लेते हैं
वही बाधाओं की निष्ठुर कलाई मोड देते हैं
उन्हीं की कल्पना साकार होकर गीत गाती है
सफलता, खुद उन्हीं की राह में पलकें बिछाती है

कि जो, भुजपाश में तूफान अपने बांध सकते हैं
खुशामद वो नहीं करते, न किश्ती से, न साहिल से.



जिन्दगी का नशीला सफर

यूं कटे जिन्दगी का नशीला सफर
मैं सभालूं तुम्हें, तुम मुझे थामना
मेरा विश्वास तो, चाह में बस इसी-
मर गया, फिर भी जीती है संभावना

जिसकी श्रद्धा जहां थी उधर वो गया
कोई मस्जिद गया कोई मन्दिर गया
वो पुजारी कहां जायें जो रूप को
सिर झुका दिल की करते हैं आराधना

खुश थे हम, आज पल भर को आंसू रुके
कोई कोशिश भुलाने की अब हो सके
पर तभी दीप पर इक शलभ यूं जला
हो गया उनकी यादों से फिर सामना

जानता हूं नहीं होती प्रतिमा मुखर
मरघटों से जुडी प्रीत की हर डगर
सिर्फ माटी बदलती रही रूप को
मर सकी कब भला प्राण की कामना.

वह सौगात बहुत है

जितना दर्द दिया है तुमने मुझको वह सौगात बहुत है.

आज मुझे मादक तृप्ति की
आशायें विश्वास न दो तुम
मांगे भी तो मेरे याचक
अधरों को मृदुहास न दो तुम
मेरे आकुल प्राण न बांधो
प्यासी बाहों में यौवन की
मेरे सपनों के उपवन को
पतझर दो मधुमास न दो तुम

उर के मरुथल की तृप्ति को नयनों की बरसात बहुत है.

मिल भी जायें, माना पथ के
बिछड़े बिसरे कूल भी
बन जाये सिंदूर मांग का
यह पग लुंठित धूल भी
किंतु मन की डोर तोड़कर
गांठ लगाना व्यर्थ है
बन सकती है भाग्य किसी का
अनजानी इक भूल भी

प्राण ! मेरे शीशे से मन पर यह निष्ठुर आघात बहुत है.

सपनों की वातायन

मुझ तक आने से पहले शंकित दुनिया की
अनुदार निगाहों का कलमष लग जायेगा
है ज्ञात मुझे, इसलिए तुम्हारे स्वागत में
मैं सपनों की वातायन खोले बैठा हूं.

तुम तो दूरागत वंशी की स्वर लहरी से-
बस गूंज गए पल भर को मन की घाटी में
क्या जानोगे कितने गहरे अवशेष छोड
तुम चले गए प्राणों की गीली माटी में

बे मौसम नयनों में सावन भर डाला है
तुमने तो पूनम को मावस कर डाला है
आकर अपना लो निर्वासित अभिलाषा को
इन आकुल विश्वासों का राजतिलक कर दो
लिख दो सुमुखि ! इसमें दो बोल समर्पण के
मैं जीवन की रामायण खोले बैठा हूं.

मैं भटक रहा अनजान तिमिर की गलियों में
तुम तो पूनम के आंगन दीप जलाते हो
अनदेखा कर मेरी माटी की गागर को
तुम हो कंचन-कलशों पर नीर लुटाते हो

तुमने मुझको मरूथल में लाकर छोड़ दिया
मंजिल कैसी, पथ में भटकाकर छोड दिया
चाहे जीवन के सारे पुण्यों को ले लो
लेकिन पूजा के फूल कलंकित नहीं करो
अपनेपन का थोडा सा अर्घ्य इसे दे दो
मैं युग-युग का आराधन खोले बैठा हूं.

नयन चुराये रहते हो

सपनों में मिलते अपनों से, जीवन में पराये रहते हो
मन से गठबंधन करके भी तुम नयन चुराये रहते हो.

अभिव्यक्त भला कैसे होगी प्राणों की आकुल अनुभूति
कुछ तो मैं भी संकोची हूं कुछ तुम शरमाये रहते हो.

इन सांसों में सुरभि तेरी, मन में तेरी मादक यादें
आते भी नहीं, पर यूं लगता जैसे तुम आये रहते हो.

तुमसे अनजानी हो ऐसी, सुमुखि, अब कोई बात नहीं
तुम जान-बूझकर भी खुद को अनजान बनाये रहते हो.

'त्यागी' जाने अब कहां मिले, आश्रय प्राणों की पीड़ा को
जब तुम ही मेरे आंसू से दामन को बचाये रहते हो.

दर्द का उपचार

आ गयी जब सामने-
मंजिल तभी,
बढ़ गया कुछ पंथ का विस्तार
रात से थोड़ा उजाला
जब मिला
भोर ने बिखरा दिया अंधियार.

मेघ की सहती हुई अवहेलना-
जिन्दगी, तपते
मरूस्थल सी रही
बुझ नहीं पायी पिपासा प्राण की
रह गयी सब-
वेदनाएं अनकही
सांस की सारी धरोहर चुक गयी
तब मिला इक स्वप्न को आकार.

जो चमन मधुमास के-
हाथों लुटा
क्या शिकायत वह करे पतझार से
पार लगती प्यार की
तरणी नहीं
विश्वास की टूटी हुई पतवार से
राहतों ने कर दिया आहत जिसे
कब हुआ उस दर्द का उपचार.

द्वार का नन्हा दिया

मैं नहीं हूं चांद सा सुंदर सलोना
मैं किसी आकाश का कंगन नहीं हूं
हूं नहीं मैं रूप का गहना किसी का
मैं किसी के प्यार का दरपन नहीं हूं

मानता हूं एक नन्हा सा दिया हूं
पर किसी को रोशनी देकर गला हूं
मैं रूपहले चांद सा कायर नहीं हूं
हर अंधेरी रात में हंसकर जला हूं

मैं न सीखा हूं, शरद की चांदनी में
ले गगन को बांह में सौरभ लुटाना
चार दिन के बाद फिर काली अमा से
डर कहीं जा दूर पर मुखडा छिपाना

अश्रुओं का नीर आंचल में भरे हूं
नेह की बाती कलेजे से लगाये
जल रहा हूं मैं विरहणी के हृदय सा
पर, किसी की आरती को हूं सजाये

मैं अंधेरे का जहर पीता रहा हूं
रोशनी की लाज मुझसे ही थमी है
जन्म मेरा कह रहा है चांद में भी
पूर्णता होती नहीं है, कुछ कमी है.

ताजमहल तक पहुंचे हैं

प्यासे पनघट की पीड़ा के, स्वर बादल तक पहुंचे हैं
यह सच है, पर घायल सपने कब आंचल तक पहुंचे हैं

अनगिन सदियां, जन्म अनेकों चलते चलते बीत गए
सहकर लाखों दर्द, मिलन के हम इस पल तक पहुंचे हैं

जब भी मन का दर्पण चटका, टूटे सांसों के घुंघरु-
सरगम में ढलकर वो सारे स्वर पायल तक पहुंचे हैं

इक मुट्ठी भर छांव की खातिर हम तो भटके जीवन भर-
सुनते हैं कुछ लोग कदम भर चल मंजिल तक पहुंचे हैं

जब खंडित सपनों की डोली, उठी सिसकते घूंघट से
कौन कहे, हैं किसके आंसू जो काजल तक पहुंचे हैं

तन को खाद बनाकर हमने स्वेद कणों को बोया था
लेकिन हम कब निर्माणों की पकी फसल तक पहुंचे हैं

मन में बसी, मुमताज के माथे हमने वफा का ताज रखा
हम दिल की दौलत को लुटाकर ताजमहल तक पहुंचे हैं

आहत मन जब हुआ तो राहत देनेवाला गीत लिखा
खाये सौ सौ जख्म, तभी हम एक गजल तक पहुंचे हैं.

वरदान नहीं मिलता

श्रद्धेय बाबू सिंह चौहान को समर्पित

पूजा के लिए मंदिर हैं बहुत लेकिन भगवान नहीं मिलता
झोली है भरी आशीषों से लेकिन वरदान नहीं मिलता

जाती हैं सारी नौकाएं तन के ही कूल-कगारों तक
जो मन के तट तक पहुंचा दे ऐसा जलयान नहीं मिलता

पीड़ा के लिए हैं द्वार बहुत, आंसू के लिए हर वातायन
केवल खुशियों के आने को इक रोशनदान नहीं मिलता

जिसमें वो दें इन 'नारों' को, 'वादों' का डाले खाद-नीर
काटें फसलें खुशहाली की, ऐसा खलिहान नहीं मिलता

रैली, थैली और टोपी के, मौलिक अधिकार लिखे मिलते
रोटी, रोजी का जिक्र मिले वह संविधान नहीं मिलता

'बिजनौर' में मेरी नन्हीं सी प्रतिभा मुरझाकर रह जाती
यदि स्नेह की गागर छलकाता कोई 'चौहान' नहीं मिलता।

जंजीर प्यार की होती है

सौ-सौ खुशियां देकर लेते हैं मोल जिसे
ऐसी मनभावन पीर प्यार की होती है.

परिचय के अनगिन दांव लगाने से क्या है
स्वागत के वंदनवार सजाने से क्या है
बिन आहट मन के द्वार नयन की राहों से
चुपचाप चला आता है जिसको आना हो
मन-प्राण समर्पित उसको ही हो जाते जो
मुंह बंद सीप के मोती सा अनजाना हो

जो बाहर दीख न पाये बांधे तन-मन को
ऐसी छलिया जंजीर प्यार की होती है.

कुछ और निकटता हो जाती है दूरी में
सपने दर्पण बन जाते हैं मजबूरी में
हो भले कंठ पर कैद लगी खामोशी की-
मन की वीणा पर प्राण गीत दुहराते हैं
संकल्पों के पांवों की हलकी ठोकर से
व्यवधानों के पाहन पानी बन जाते हैं

आंसू से धुलकर और निखरती जाती है
ऐसी अनुपम तस्वीर प्यार की होती है.

हर बाजी हारी है

अब तो पलकें, वह तीरथ हैं जिनके तट पर-
जो अश्रु नहाता, गंगाजल बन जाता है.

मैंने आंधी के आगे झोली फैलाकर
अपने बीमार दिये की उमर नहीं चाही
निज पांवों के रिसते छालों से घबराकर
शूलों से रीती कोई डगर नहीं चाही
चुपचाप सहा वह शाप दिया जो अधरों ने
धर दिया मगर अमृत-घट जग के होठों पर
जो केवल मेरी तरणी की ही बांह गहे-
मैं डूब गया पर ऐसी लहर नहीं चाही

इसलिए आज भी अगर अकेला हंसता हूं
उल्लास दर्द सा ही बोझल बन जाता है.

अपने संकल्पों के दीपक की ज्योति से
मायूस चिरागों की लौ सदा उभारी है
आकुल प्राणों को देकर निंदियां पलकों की
सिरहाने लोरी गाकर रात गुजारी है
याचक बनकर रह गया दान इतना बांटा
रोया जिससे पाहन पाषण पिघल जाये
बस इसीलिए कि कोई मुझसे जीत सके
हर दांव गवांया है हर बाजी हारी है

कोई भी सांस सिसकती है यदि पीड़ा से
मेरा यह भाउक मन घायल बन जाता है.

सावन को ला बसा दूं

यह कामना है मेरी, निर्माण बन के जागूं
झुलसी हुई धरा पर सावन को ला बसा दूं.

मैं देखता तिमिर में डूबा हुआ चमन है
हर दीप पर अंधेरा डाले हुए कफन है
सपनों ने बांध दी है हर चेतना पे डोरी
संहार के निलय में बंदी पड़ा सृजन है

यह कामना है मेरी दिनमान बन के जागूं
मगरूर कालिमा के सिंदूर को मिटा दूं
झुलसी हुई धरा पर सावन को ला बसा दूं.

अपनत्व खो गया है नफरत बरस रही है
दुर्भावना हृदय पर जंजीर कस रही है
सिंदूर पोंछ डाला है प्यार का किसी ने
दो घूंटें सान्त्वना को पीड़ा तरस रही है

यह कामना है मेरी इन्सान बन के जागूं
हर आदमी धरा का भगवान सा बना दूं.
झुलसी हुई धरा पर सावन को ला बसा दूं.

अकुला रहा है यौवन, सिंगार रो रहा है
रूठा हुआ समर्पण अभिसार रो रहा है
पूजा सिसक रही है, मंदिर उदास सा है
परवश सी अर्चना है मनुहार रो रहा है

यह कामना है मेरी वरदान बन के जागूं
सूनी पड़ी है जितनी सब आरती सजा दूं
झुलसी हुई धरा पर सावन को ला बसा दूं.

मरघट से वरदान मिले

जीवन में अधूरे रहने थे, हमको ऐसे अरमान मिले
डूबे जो किनारे पर जाकर ऐसे शापित जलयान मिले

जीवित ही शिला बन जाती है
जिनके चरणों को छूने से-
श्रद्धा की अहिल्या को जग में
अकसर ऐसे भगवान मिले

अभिशाप अभावों - पीड़ा का,
सौगात ये खंडित सपनों की-
जीवन से मिली, अब देखें तो
क्या मरघट से वरदान मिले

खुशियों ने कभी, आश्रय न दिया
प्राणों की भटकती पीडा को
आंसू को हमेशा दुनियां में
असफल सब अनुसंधान मिले

चेहरों पे लगे इतने चेहरे
पहचान सभी की मुश्किल है
इस भीड में कितने पहचाने
हमसे बनकर अनजान मिले

यह ठीक नहीं पतझारों ने
उपवन को उजाडा है 'त्यागी'
कुछ फूल भी छिपकर कांटों को
गिरवी रखते ईमान मिले.

है धनी बस वह कलम का

जो कि सुविधा के लिए
बिक जाये वह भी लेखनी क्या
जो व्यवस्था की प्रशस्ति
गाये वह भी लेखनी क्या
बात तो तब है कि अपनी-
नोंक से तलवार काटे
जो न पतझर में बहारें-
लायें वह भी लेखनी क्या

है कवि बस वह, कि जो-
सोते पहाड़ों को जगाये
जो बवंडर की अटारी पर-
सदा दीपक जलाये
जो निराला और 'धूमिल'-
या कि 'मुक्ति बोध' जैसे
पी अभावों का हलाहल-
भी सदा अमृत लुटाये

काव्य का जो रक्त से-
शृंगार करना जानता है
जो सुमन की म्यान में
तलवार रखना जानता है
जो है विषपायी जनम का
है धनी वो ही कलम का
काव्य जिसका दर्द का-
उपचार करना जानता है.

लेखनी को यह नहीं स्वीकार

लोग कहते हैं, लिखूं श्रृंगार के मैं गीत
रूप के, मादक प्रणय, अभिसार के मैं गीत
लेखनी को यह नहीं स्वीकार तो मैं क्या लिखूं ?

देखता हूं चीथड़ों में, लाज को ढकती जवानी
भूल जाता, रूप का महका हुआ आंचल
याद आते, अस्थि-पंजर भूख के मारे हुए-
भूल जाता हूं नशीली आंख का काजल
आहटें, फाकों की, जब भी हैं सुनी
मैं सदा पायल की रुनझुन भूल जाता हूं
सिसकियां कानों में पड़ती हैं अगर-
मैं जनमते गीत की धुन भूल जाता हूं

कैसे लिखूं, तब मधुर मनुहार के मैं गीत
महके सावन की उमंगो प्यार के मैं गीत
जब कि साजिश कर रहा पतझार तो मैं क्या लिखूं ?

चाहा जब, इतिहास की, गौरव कथाओं पर लिखूं
तब अचानक, एक जलता घर दिखाई दे गया
प्यार से, बांहें पसारे, आया जब सम्मुख अतीत-
रक्त-रंजित सा कोई खंजर दिखाई दे गया
आंगनों से, लोरियों के स्वर, अभी उभरे ही थे
मैंने यह देखा, भयानक शोर गलियों से उठा
कुछ, घृणा के जहर में, डूबे हुए नारे तभी-
खून से, फिर लिख गए, वहशी दरिंदों की कथा

क्या लिखूं, लाशों के इस बाजार के मैं गीत
रोशनी डसते हुए अंधियार के मैं गीत
खून में डूबा हो जब संसार तो मैं क्या लिखूं ?

तुम्हारे नैन दर्दीले

तुम्हें मैं पा नहीं सकता, तुम्हें मैं खो नहीं सकता
तुम्हें अपना चुका हूं पर तुम्हारा हो नहीं सकता.

विकल अनुभूतियां जब दर्द को पायल पिन्हाती हैं
उमडते आंसुओं पर गीत की सरगम सजाती हैं
सिसकती सांस को जब सान्त्वना देती मधुर यादें
न जाने क्या विवशता है मैं खुलकर रो नहीं सकता
तुम्हें मैं पा नहीं सकता, तुम्हें मैं खो नहीं सकता.

तुम्हारी याद मन के द्वार जब दस्तक लगाती है
तुम्हें मालूम क्या है भोर तक मुझको जगाती है
विदा की पीर में डूबे तुम्हारे नयन दर्दीले-
मुझे जब याद आते हैं घड़ी भर सो नहीं सकता
तुम्हें मैं पा नहीं सकता, तुम्हें मैं खो नहीं सकता.

तुम्हारी कामना में दीप सा जलता रहा हूं मैं
मिलन की आस लेकर आजतक चलता रहा हूं मैं
मगर यह दूरियां अब पांव में चुभने लगी ऐसी
कि जैसे उम्र का यह बोझ अब मैं ढो नहीं सकता
तुम्हें मैं पा नहीं सकता, तुम्हें मैं खो नहीं सकता.

मांगे नहीं उजाले

हर कामना से मन को, आजाद करके खुश हैं
दुनिया की बेरूखी को, अब याद करके खुश हैं

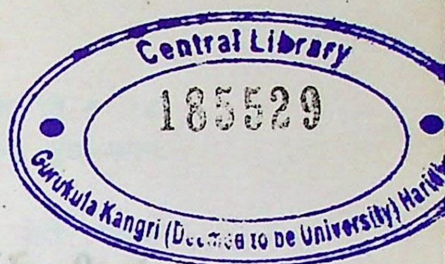
औरों ने जिन्दगी की खुशियों को शब्द बांटे
आंसू की हम व्यथा का अनुवाद करके खुश हैं

ले लें कलश-कंगूरे, यश भव्य इस भवन का
हम नींव में ही खुद को आबाद करके खुश हैं

सूरज की कर प्रशस्ति, मांगे नहीं उजाले-
दीपक हैं हम, तिमिर से, संवाद करके खुश हैं

निर्माण की फसल तक पहुंचे नहीं तो क्या है
माटी में अपने तन को हम खाद करके खुश हैं

अब टूटता नहीं है, हर चोट सह रहा है
शीशे सा दिल ये अपना फौलाद करके खुश हैं.



परिचय नहीं है

फिर न आंखे प्रीत का काजल रचायें
फिर न मुग्धा भावनाएं गुनगुनायें
डबडबाती एक खंडित कामना का
हो भले निश्चय मगर निर्णय नहीं है.

जो किन्हीं संभावनाओं पर टिका हो
वह नहीं विश्वास मन की सान्त्वना है
जुड गयी हो जो किसी प्रतिदान से तो-
और कुछ है वह, नहीं आराधना है.

प्यार का तीरथ नहीं है देह का तट
प्रीत पावन घाट पर मन के नहाती
हों न जिसके साथ फेरे भावना के
वह महज अभिसार है परिणय नहीं है.

दर्द को वो ही समझता है किसी के
जिस किसी के वक्ष में टूटा हृदय हो
उलझनों की लट वही सुलझा सका है
जिस किसी से उम्र भर रूठा समय हो

वंश आंसू का चलाने के लिए ही
दर्द को स्वीकार करती आ रही है
इसलिए शायद अभागी जिन्दगी का
हास से संबंध है परिचय नहीं है.

झुके ही रहेंगे नयन

हो न प्रतिमा मुखर, प्रीत की उम्र भर
वन्दना में झुके ही रहेंगे नयन.

बेड़ियां डालकर प्रीत को तुम सदा
नीति के पांव पर ही झुकाये रहो
स्नेह के, सिंधु के ज्वार को तुम भले
भीत में पुतलियों के छिपाये रहो
एक दिन तोड़कर बंधनो को स्वयं
प्यास आकर अधर पर मचल जायेगी
चाह की आग को संयमी राख से
चार दिन तुम भले ही दबाये रहो

त्याग दो तृप्ति को यह कठिन कुछ नहीं
पर न कर पाओगी, प्यास को तुम दफन.

धूल होकर धरा की बड़ी भूल की
चांद को मैं गले से लगाने चला
स्वप्न थे जो धरोहर किसी और के
सेज पर कल्पना की सजाने चला
रूप के सामने नत हुई कामना
वंदना के लिए झुक गए ये नयन
आंख से जब मिली अश्रु की बूंद तो
गीत के सिंधु में ज्वार आने लगा

सर लिये अंक में ध्यान भी न रहा
भोर होगी चले जायेंगे सुख-सपन.

मैं अमर हूं, अमर है मेरी कामना
मैं मरुंगा नहीं, देह गल जायेगी
भाव भी, शब्द भी, गीत होंगे वही
भूमिका मात्र किंतु बदल जायेगी
सिट्टियां ही बदलती रहेंगी सदा
आज इस रूप में कल किसी रूप में
कामना देह के साथ मरती नहीं
पा नई देह दूनी उजल जायेगी

कल इसी राह में, इस गली में मुझे
तुम मिलोगी कभी तो बिछाये नयन.

धड़कनों से भरा तुम समर्पण लिए
जा रही हो अपरिचित किसी देश में
व्यस्त हो कल्पना में सुखद स्वप्न की
खोजने क्यों लगी मोह निःशेष में
आज क्या दूं तुम्हें मेरा कुछ भी नहीं
सांस भी प्यार में रख चुका हूं रहन
शेष हैं कामनाएं, विफल याचना-
अश्रु के रूप में, गीत के वेश में

सांस चलती हुई लग रही है मगर-
जिन्दगी ओढ़कर सो गयी है कफन.

मुक्तक

स्वप्न जैसे सत्य की परछाई है
गीत जैसे प्यार की अंगड़ाई है
ठीक वैसे ही सदा संसार में–
भूमिका हर दर्द की शहनाई है.

द्वार सब हैं एक, दस्तक भिन्न हैं
भाव सब हैं एक, मस्तक भिन्न हैं
जिन्दगी स्कूल है ऐसी जहां–
पाठ सब हैं एक, पुस्तक भिन्न हैं.

एक पथ में सह रहा है यातना
एक की होती कहीं आराधना
किस शिला के खंड को मालूम है
क्या से क्या उसको बना दे भावना.

अश्रु की हर याचना में पीर है
हर मिलन के पांव में जंजीर है
कोई माने या न माने जिन्दगी–
एक खंडित स्वप्न की तस्वीर है.

अहसान उनका

दे गए हैं दर्द की सौगात, यह अहसान उनका
सज रही है गीत की बारात, यह अहसान उनका.

ज़िन्दगी अपनी तो इक तपता सा रेगिस्तान थी
आंसुओं की हो गयी बरसात, यह अहसान उनका.

यूं भी ग़ैरों से मिली हर चोट, सह जाता था दिल
कर गए अपने भी कुछ आघात, यह अहसान उनका.

रोशनी में, बेवफा नजरों का खुल जाता भरम-
आये वो, मिलने को आधी रात, यह अहसान उनका.

बात थी लमहों की लेकिन, मुंतज़िर सदियों रहे
पर न कह पाये वही इक बात, यह अहसान उनका.

पहले हम तनहा थे पर, जब से मिला शौके-जुनूं
हो गयी इक भीड अपने साथ, यह अहसान उनका.

जब खुला यह राज, वो पढते हैं 'त्यागी' की गजल
ले रहे हैं लोग हाथों-हाथ, यह अहसान उनका.

जब मैंने चांद निहारा

कल पूनम की रात अंटारी से जब मैंने चांद निहारा
उसे देखकर घिर-घिर आया मेरे मन में ध्यान तुम्हारा.

मुझे याद हो आया जिस दिन,
हम तुम पहली बार मिले थे
उस दिन भी हर ओर -
सितारों के ऐसे ही दीप जले थे
इसी तरह चन्दा की बांहें
घेरे थीं धरती के तन को
हम दोनों की सांस-सांस में
कितने मादक स्वप्न घुले थे

चन्दा की मगरूर निगाहें, तुम्हें देख यों शरमायी थीं
जैसे कोई दांव लगाकर हार गया हो वैभव सारा.

लाज भरे हाथों से तुमने,
डाल लिया था मुख पर आंचल
ढांप लिया हो चन्दा ने मुंह
जैसे देख आवारा बादल
मुझे लगा संयम की सारी-
कड़ी झनझना कर टूटी है
खनक उठी थी बरजोरी में
सहसा प्राण तुम्हारी पायल

तट से खोली नाव समर्पण ने यौवन ने डांठ संभाली
जितना गहरा डूबे हम तुम आया उतने पास किनारा.

आज तुम्हें भी देता होगा
खिडकी से यह चांद दिखाई
तुमको भी आकुल करती हो
सुमुखि ! शायद ये तनहाई
गीले तकिए से तुम भीगी -
आंखे पोंछ रही होंगी
अगर सिसकती यादें मन में
लेती होंगी अंगडाई

लेकिन मेरे मीत लगन का दिया कभी बुझने मत देना
हम दोनों पीकर छोड़ेंगे, बदसूरत जग का अंधियारा.

मुक्तक

तार झनकार भरें, जब कि कोई साज न हो
गीत गा जाये उमर, सांस को अंदाज न हो
इस तरह शोर मचाते हुए आती है खुशी-
दर्द आ जायें दबे पांव तो आवाज न हो.

कालिमा हंसती मिली है भोर की अंतःपुरी में
दर्द ही के स्वर उभरते पाये हैं हर बांसुरी में
रूप से अनुराग करके अब हुआ यह ज्ञात हमको
शूल से ज्यादा चुभन होती सुमन की पांखुरी में.

प्रीत पाहुन के लिए मन का झरोखा खोलो
शब्द असमर्थ हैं सब मौन की भाषा बोलो
अपने बिश्वास की जब तुमको परख करनी हो-
अपनी मंजिल की लगन पग की थकन से तोलो.

रूप अभिसार को छल जाये जरूरी तो नहीं
हर खुशी हास में ढल जाये जरूरी तो नहीं
छिप के शमां से भी कुछ जलते हैं जलनेवाले
हर शलभ दीप पे जल जाये जरूरी तो नहीं.

मालूम नहीं

दो घूंट तृप्ति का, दान मुझे भी दे जायें
वह गागरिया कब आयेगी मालूम नहीं.

नीति-नियमों के पांव झुकाकर जीवन को
मन की दुल्हन कब तक निज पीर छिपायेगी
कहने से डर है बात पराई होने का
दुनिया जाने क्या-क्या अनुमान लगायेगी

जिसमें ढककर सब दर्द सौंप दूं माटी को
वह चादरिया कब आयेगी मालूम नहीं.

गरजे-बरसे घन विश्वासों के बहुत मगर
मेरा चातक मन, खड़ा रह गया प्यासा ही
दुनिया को चाहे तृप्ति बांट गया हो पर
मेरे द्वारे खामोश रहा चौमासा भी

सागर सा नेह छलकता हो -जिसके उर से
वह बादरिया कब आयेगी मालूम नहीं.

नीर डूबे नयन के लिए

एक टूटे सपन के लिये
नीर डूबे नयन के लिये
इक खुशी ही गुनहगार है.

अश्रु से गीत मिलते गले
जब, मधुर कामनाओं तले
दर्द बनकर, उमडते तभी
भूले-बिसरे सपन मन चले

नीर कहता नयन का यही
किस तरह है विवश जिन्दगी
यह हंसी सिर्फ दिन चार है.

तन जला, आस जीती रही
दर्द के घाव सीती रही
चूमकर, वेदना के अधर-
अश्रु की दाह पीती रही

सांस के आखिरी दांव तक
मौत के अजनबी गांव तक
मुस्करा कर, चला प्यार है.

रागिनी, हो न पाई मुखर
तार बिखरे, सभी टूट कर
जिन्दगी को बहा ले गयी
सांस की एक नन्ही लहर

हर निमंत्रण, सिसकता रहा
हर वचन सर पटकता रहा
मौत कितनी बड़ी हार है.

गंध मचली, कली चूमकर
मंद मलयज चली झूमकर
बांटने, चल पड़ी हर गली
भीगे, भीगे सपन घूम कर

यह मगर तब किसे ज्ञात था
रूप हरने को तृण-पात का
रास्ता रोके पतझार है.

ऐसा मनमीत नहीं मिलता

मन की पीड़ा को स्वर दे दे
जग में वह गीत नहीं मिलता
खंडित वीणा के तारों से
मादक संगीत नहीं मिलता

रूपाली तन को मिल जाते
अभिसार लिए भुजपाश बहुत
अधरों पर अंकित होने को
आतुर रहते विश्वास बहुत
तृप्ति के कंचन-कलशों को
लाखों आराधक मिल जाते
पनघट की प्यास समझ पाये
ऐसा मनमीत नहीं मिलता.

है दर्द सभी का एक, मगर
अंदाज अलग है सहने का
है बात एक सबकी, लेकिन–
है अलग तरीका कहने का
कुछ आंसू खुशियों से ज्यादा
मन को राहत दे जाते हैं

पर जग में झूंठा सपना भी
अब लेकर प्रीत नहीं मिलता.

कहां लेकर डगर पहुंचे

हमारे दर्द की, उन तक भला कैसे खबर पहुंचे
जहां सपने नहीं जाते, वहां कैसे नजर पहुंचे.

निराला रूप है संवेदना का आज हर तट पर
कोई जब डूब जाये सिसकियां लेती लहर पहुंचे.

संभाली बांह पीडा ने दिखाई राह आंसू ने-
किसी के पास से उठकर बडी मुश्किल से घर पहुंचे.

वो शापित प्राण हो आरंभ जिनकी राह मंजिल से
समस्या है यही उनको कहां लेकर डगर पहुंचे.

हृदय टूटा किसी का यह उन्हें मालूम कैसे हो
ये दर्पण तो नहीं टूटे तो सबके पास खबर पहुंचे.

है मिलन बांहें पसारे

जानता है प्राण को घेरे मधुर अनुभूतियों को-
ये पवन, ये चांद इस तनहाई को पहचानता है.
कह नहीं सकता भले दर्पण, मगर सच बात है, वो-
हर अलस अंगड़ाई की अनबोल भाषा जानता है.

नील नयनों में तुम्हारे तैरते रंगीन सपने-
किस कदर वाचाल होकर, प्रश्न करने लग गये हैं.
कोई तो अनजान है मनमीत, जिसकी आरती में-
ये नयन आराधना के दीप धरने लग गये हैं.

शंकिता सी कब तलक यों द्वार पर बैठी रहोगी?
है मिलन बाहें पसारे, और तुम चुपचाप हो!
हैं अधर आतुर तुम्हारे और तुम चुपचाप हो!

हो भले बन्धन सुमन पर, गंध तो बंधती नहीं है-
पूर्णिमा के आगमन पर ज्वार आकर ही रहा है.
कामना, निर्लिप्त सी वैरागिनी बनती नहीं है-
जब अभावों ने पुकारा प्यार आकर ही रहा है.

कौन सी खुशियां भला उस पर न होंगी-
अश्रु के पीकर चषक जो झूमता है.
जो भुजाओं में भरे चलते बवण्डर-
सिंधु खुद उनके चरण को चूमता है.

सामने ही हैं किनारे, और तुम चुपचाप हो
हैं अधर आतुर तुम्हारे और तुम चुपचाप हो.

तुम क्यों चले आये ?

अमावस की अंधेरी रात है, तुम क्यों चले आये ?

घनेरी रात नभ में इस तरह छाई उदासी है
कि जैसे तप्त प्राणों में कोई पीड़ा प्रवासी है
बिरागिन पीर के द्वारे बरसते अश्रु के बादल
नयन में फिर सजल बरसात है तुम क्यों चले आये ?

मुझे है ज्ञात बंधन में, कभी बंधता नहीं है मन
हृदय कब मानता है लाख प्रहरी के जटिल बंधन
हमें इन दूरियों ने पास कितना ला दिया देखो-
तुम्हारी याद मेरे साथ है तुम क्यों चले आयें !

नशीले प्यार के स्वर को मरण भी छू नहीं सकता
हजारों शूल हों पथ में लगन का पग नहीं रुकता
डगर है पांव के नीचे नहीं मालूम मंजिल की-
अभी तो प्रीत की शुरूआत है, तुम क्यों चले आये !

अगर तुम साथ दो तो दर्द की जंजीर गल जाये
हमारी कामना को स्वप्न की जागीर मिल जाये
मगर तुम छोड मत देना, कहीं विश्वास का आंचल
यही तो प्यार की सौगात है तुम क्यों चले आयें !

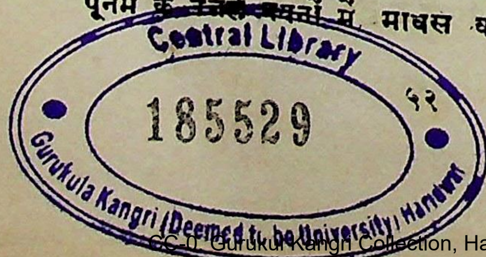
काजल मिला हमें

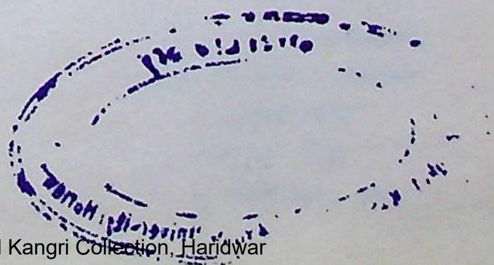
शहरों के भीतर बसा हुआ, जैसे इक जंगल मिला हमें
बस्ती से ज्यादा मरघट में, अक्सर कोलाहल मिला हमें.

अनगिन चौराहे सम्मुख हैं, मनचाही राह नहीं मिलती
दुख की तपती दोपहरी में, पलभर को छांह नहीं मिलती
रेतीले पथ में तृष्णा के, केवल मृगजल ही मिला हमें.

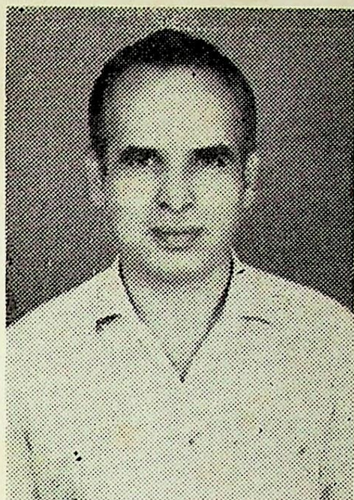
जीवन के कोरे पृष्ठों पर, लिक्खा इतिहास विवशता का
हर शूल सर्ग बन गया, पांव के सह जाने की क्षमता
विश्वासों का घूंघट डाले, हर छलिया संबल मिला हमें.

आवेश भरे अभिसारों ने, जाना कब मोल समर्पण का
मनचाही छवि को बांध सके, यह भाग्य कहां है दर्पण का
पूनम के उजले वसनों में मावस का काजल मिला हमें.






097
185529



विजयवीर त्यागी

जन्म : २० फरवरी १९३७
बिजनौर (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा : एम. ए.
(प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम, बम्बई विश्व विद्यालय)
सम्प्रति शोधरत (बम्बई विश्व विद्यालय)
प्राध्यापक-सेंट एन्ड्रूज डिग्री कॉलेज, बान्द्रा, बंबई

संपादन : 'आशीर्वाद' (अर्धवार्षिक)
'रजनीगंधा' (सिने पाक्षिक)
'सिने नगर' (पाक्षिक)
'चिंगारी' (साप्ताहिक, बम्बई संस्करण)

साहित्य : 'मधुवन' मुक्तक संग्रह
'देश की माटी तुम्हें पुकारे' (संपादित)
'श्रद्धांजलि' (संपादित)

प्रकाशन पथ पर : 'मेहरबानी आपकी' (हास्य व्यंग्य कविताएं)
'अतीत के साये' (उपन्यास

पता : ३०५, 'ग्रीनफील्डस'
शरले राजन रोड,
बान्द्रा, बंबई-४०० ०५०.